ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-6* September-2021
Anthology : The Research

सल्तनतकालीन अमीर वर्गः महत्व एवं महत्वाकाँक्षाऐं (दास वंश के विशेष संदर्भ में)

Sultanate Rich Classes: Significance and Aspirations (With Special Reference to the Slave Dynasty)

Paper Submission: 14/09/2021, Date of Acceptance: 24/09/2021, Date of Publication: 25/09//2021

अर्चना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी,
प्रयागराज, भारत

सारांश / **Abstract**

भारत में तुर्की विजय के उपरान्त जिस नवीन युग का प्रारम्भ हुआ उसे भारतीय इतिहास में दिल्ली सल्तनत के नाम से जाना जाता है। वास्तविक रूप से यह नवीन संस्कृति व सभ्यता का भारतीय समाज में उदय था। इस काल में कई सुल्तानों का शासन रहा किन्तु ये सुल्तान औपचारिक रूप से खलीफा की सत्ता स्वीकार करते थे। वास्तविक रूप से ये शासन करने के लिए स्वतन्त्र थे परन्तु इन सुल्तानों पर विभिन्न प्रकार के वर्ग अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ में लगे रहते थे जैसे - उलमा वर्ग और अमीर वर्ग आदि। जहाँ उलमा वर्ग धर्माधिकारी वर्ग था वही अमीर (उमरा) वर्ग प्रशासनिक व्यवस्था की धुरी थे। प्रस्तुत शोधपत्र में इसी प्रशासनिक वर्ग अर्थात् अमीर वर्ग के महत्व के विषय में विस्तृत वर्णन करने का प्रयास किया गया है। प्रारम्भिक नवनिर्मित दिल्ली सल्तनत के संचालन में इस अमीर वर्ग की क्या भूमिका रही और इस वर्ग ने सत्ता व प्रशासन को किस प्रकार प्रभावित किया तथा उनकी क्या महत्वकांक्षायें रहीं, इसे दिखाने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है।

The new era that started after the Turkish conquest of India is known in Indian history as the Delhi Sultanate. In fact, it was the rise of a new culture and civilization in the Indian society. Many sultans ruled during this period, but these sultans formally accepted the authority of the Caliph. In reality, they were free to rule, but different types of classes were competing to establish their dominance over these sultans, such as the Ulama class and the wealthy class etc. Where the Ulama class was the virtuous class, the Amir (Umra) class was the pivot of the administrative system. In the present paper, an attempt has been made to elaborate on the importance of this administrative class i.e. the rich class. An attempt has been made in this research paper to show what was the role of this wealthy class in the operation of the early newly formed Delhi Sultanate and how this class influenced the power and administration and what were their ambitions.

मुख्य शब्दः इस्लाम, दिल्ली सल्तनत, तुर्क, सुल्तनत, खलीफा, उलमा, उमरा, अमीर, शरीयत, राजत्व, खिलाफ़त आदि।

Keywords: Climate, Delhi Sultanate, Teak, Sultanate, Caliphate, Ulma, Urma, Amir, Shariat, Kingship, Contrary etc.

प्रस्तावना

भारत में इस्लाम के प्रवेश के साथ ही 1206 ई में एक नवीन प्रकार के राज्य की स्थापना हुई। जिस दिल्ली सल्तनत की नीवं 1206 ई में मोहम्मद गौरी के एक विश्वासपात्र दास कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा हुई, उसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान था। मोहम्मद गौरी के दास-अमीरों ने साम्राज्य विस्तार करते हुए उत्तरी भारत में एक नवीन शासन स्थापित किया। इस शासन स्थापना में अमीर वर्ग (उमरा वर्ग) का विशेष योगदान था। यह वर्ग दिल्ली सुल्तानों की शक्ति व सत्ता का आधार थे। प्रारम्भिक काल में यह वर्ग बहुत महत्वकांक्षी नहीं था। कुतुबुद्दीन ऐबक के काल में मुइज्जी अमीर (मोहम्मद गौरी द्वारा नियुक्त) तथा कुत्बी अमीर (ऐबक द्वारा) दोनों का उल्लेख मिलता है

अमीर वर्ग का स्वरूप

सल्तनत काल में सुल्तान के बाद दूसरा महत्त्व अमीरों का ही था। ये अमीर सैनिक तथा असैनिक दोनों प्रकार के अधिकारी शामिल थे। प्रारम्भिक तुर्क अमीरों को मोहम्मद गौरी का संरक्षण प्राप्त था। इसलिए हिन्दुस्तान के सबसे उपजाऊ क्षेत्र (उत्तर भारत) इन्हें प्राप्त हुए जबकि इसके विपरित खिलजी अमीरों को दूरस्थ क्षेत्र जैसे- बंगाल, बिहार आदि प्राप्त हुए ताकि उन्हें सत्ता के मूल केन्द्र से दूर रखा जा सके। मध्यएशिया से

मंगोल आक्रमण के कारण भी अमीर लोग हिन्दुस्तान आकर बसने लगे जिन्हें इल्तुतमिश ने सम्मानित पद प्रदान किए। सल्तनतकालीन अमीर वर्ग का जन्मदाता इल्तुतमिश को ही माना जाता है जब अमीरों को अपने नेता का चुनाव करने में अधिकार मिला तब दिल्ली स्थिति अमीरों की श्रेष्ठता सिद्ध हुई। इल्तुतमिश ने ही सर्वप्रथम इस वर्ग को एक दल के रूप में संगठित किया जिसे तुर्क-ए-चहलगानी/चालीसा के नाम से जाना जाता है। जियाउद्दीन बरनी चहलगानी के स्वरूप तथा स्थिति के विषय में विस्तृत जानकारी देता है जिसके अनुसार यह एक राजनैतिक दल था जिनके मध्य सहिष्णुता की भावना न के बराबर थी। इल्तुतमिश के शासनकाल में अमीरों के कई वर्ग बन गये जैसे मुईज्जी, कुत्बी, शम्सी आदि। इनके विभिन्न वर्गों को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं।

तुर्क अमीर तुर्की शासन की स्थापना में तुर्क अमीरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा उन्होंने एक लम्बे समय तक दिल्ली सल्तनत को आधार प्रदान किया। मोहम्मद गौरी के साथ आये इन तुर्क अमीररों का महत्व प्रभुत्व पूरे दास वंश तक बना रहा।

ताज़िक अमीर दिल्ली सल्तनत में दूसरे महत्वपूर्ण स्थान पर ताजिक अमीरों का वर्ग था। ये इल्तुतमिश के शासनकाल में उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन थे।

हिन्दू अमीर ऐसे हिन्दू सामन्त, सरदार और शासक जिन्होंने तुर्की सत्ता स्वीकार कर ली थी उन्हें भी प्रशासन में महत्वपूर्ण पद प्रदान किये गये। धीरे-धीरे से शासन के महत्वपूर्ण अंग बनते गये।

नवीन मुसलमान मंगोल आक्रमण के बाद बहुत से मंगोल दिल्ली व उसके आस-पास के क्षेत्रों में बस गये और इन्होंने अपना धर्म परिवर्तन कर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया यही मंगोल नवीन मुसलमान कहलाये।

अफ़गानी अमीर दिल्ली सल्तनत की स्थापना के समय से ही अफ़गान एक महत्वपूर्ण वर्ग के रूप में सामने आने लगे थे। ऐबक के समय से ही इन्हें महत्वपूर्ण पद दिये जाने लगे थे।

अफ्रीकी अमीर रजिया ने तुर्क अमीरों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने व उसे संतुलित करने के लिए अफ्रीकी अमीरों को महत्व देना प्रारम्भ कर दिया। जलालुउद्दीन याकूत (हब्शी) भी एक अफ्रीकी था जिसकी बढ़ती प्रतिष्ठा के कारण तुर्क अमीर उससे ईष्या करने लगे और याकूत के पतन का कारण बने।

खिलज़ी अमीर अफ़गानिस्तान से आये अमीर खिलज़ी अमीर कहलाते थे। तुर्क अमीर हमेशा इनसे प्रतिस्पर्धा रखते थे तथा इन्हें अपने से हेय समझते थे।

अमीर वर्ग का महत्व व महत्वाकाँक्षाए इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत के वास्तविक संस्थापक के रूप में याद किया जाता है उसके काल में नवगठित दिल्ली सल्तनत में स्थायित्व आने लगा तब इस अमीर वर्ग की महत्वकाक्षाओं में भी बढ़ोत्तरी होने लगी। अब उनमें सल्तनतकालीन राजनीति पर अपना प्रभाव बढ़ाकर उसे नियन्त्रित करने की इच्छा बढ़ने लगी।

नवनिर्मित दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इल्तुतमिश ने अमीरों की बढ़ती हुई महत्वाकाँक्षाओं पर अंकुश लगाने के लिए इन्हें इक्ताओं में स्थानान्तरण की व्यवस्था की किन्तु सुल्तान इन्हें नाराज भी नहीं करना चाहता था क्योंकि शासन में, प्रशासन में इनका पूरा दखल था किंतु वंशानुगत/वंशीय सत्ता होने के कारण अभी अमीर उस महत्वपूर्ण स्तर पर नहीं पहुँच सके थे जहाँ वे सुल्तान की शक्ति को प्रभावित कर सकते हो।

इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद यह दल एक शक्तिशाली संगठन के रूप में उभरा जब तुर्क अमीरों ने रजिया के उत्तराधिकार को न मानते हुए इल्तुतमिश के अयोग्य पुत्र रूकुनुद्दीन फिरोज़ को नया सुल्तान घोषित कर दिया। रजिया के उत्तराधिकार को चुनौती देते हुए रूकुनुद्दीन फिरोज का सिंहासनावरोहण अमीर वर्ग के महत्व एवं उनकी बढ़ती हुई इच्छाओं को दर्शाता है। नये सुल्तान रूकुनुद्दीन फिरोज़ के काल में अमीर वर्ग को सन्तुष्ट करने के लिए उन्हें महत्वपूर्ण पद दिये गये तथा इक्ताऐं बाँटी गयी। किन्तु रूकुनुद्दीन व उसकी माँ बन्देजहाँ तुर्कान का उग्र शासन बढ़ता गया तब तुर्क अमीरों ने रूकुनुद्दीन को सत्ता से उतार कर रजिया को सुल्तान घोषित कर दिया तथा ताज़िक अमीरो को दण्डित किया गया। तुर्क अमीर वर्ग का शक्तिशाली वर्ग के रूप में उभरना तथा महत्वाँकाक्षी बनना इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। रजिया के उत्तराधिकार को सभी अमीरों ने पूरे मन से स्वीकार नहीं किया था। रजिया ने भी कूटनीति को सहारा लेते हुए अमीरों में मतभेद उत्पन्न कर दिया था। रजिया द्वारा अबीसिनियायी गुलाम जमालुद्दीन याकूत को

उच्च पद सम्भवतः इसलिए भी प्रदान किया गया जिससे वह तुर्क अमीरों की शक्ति को कमजोर या संतुलित कर सके। तुर्क अमीर वर्ग के लिए यह असहनीय था तथा धीरे-2 रजिया को नाम मात्र का शासक बनाये रखने की उनकी महात्वाकाँक्षाए धूमिल होने लगी जिसकी अन्तिम परिणिति रजिया के पतन के रूप में हुई।

यद्यपि अमीर वर्ग इस बात पर एकमत की दिल्ली की राजगद्दी पर इल्तुतमिश के ही वंशज को बैठाया जाए जिससे समस्त शक्ति व अधिकार उनके हाथों में बने रहें इसी कारण रजिया के पतन के बाद तुर्क अमीरों ने रजिया के भाई मुईज्जुद्दीन बहरामशाह को सुल्तान बनाया गया। बहरामशाह का चयन अमीर वर्ग की सोची समझी रणनीति थी क्योंकि तुर्क अमीर एक ऐसा सुल्तान चाहते थे जो नाममात्र का शासक हो और असली सत्ता का उपयोग अमीरांे के हाथ में हो किन्तु शीघ्र ही बहरामशाह ने अमीरों के बढ़ते प्रभाव से थककर इसे समाप्त करने की सोची जिससे सुल्तान व अमीरों के सम्बन्ध बिगड़ने लगे। वज़ीर इख्तियारूद्दीन ऐतिगीन की हत्या से भी सुल्तान व अमीर वर्ग के सम्बन्ध अत्यन्त खराब हो गये। अन्ततोगत्वा तुर्क अमीरों ने दिल्ली पर अधिकार कर बहराम को अपदस्त कर दिया और रूकुनद्दीन फिरोज के पुत्र अलाउद्दीन मसूद को सुल्तान घोषित किया। इस अवसर पर पदों व इक्ताओं का आपस में बँटवारा किया गया।

बहरामशाह की मृत्यु के साथ ही ताज़िक अमीर वर्ग शक्तिहीन हो गया और सभी तुर्क अमीर बलबन के नेतृत्व में शक्तिशाली होने लगे। अलाउद्दीन मसूद ने इन तुर्क अमीरों की शक्ति को संतुलित करने के लिए बड़ी चालाकी से अबीसिनियायी अमीरों को दरबार में प्रश्रय देना प्रारम्भ कर दिया। इस बात से रूष्ट तुर्क अमीरों ने सुल्तान को हटाने की योजना बनायी और इल्तुतमिश के पुत्र नासिरूद्दीन के पुत्र नासिरूद्दीन महमूद को सिंहासन पर बैठाने का षडयन्त्र बनाया तथा वे इस योजना में सफल भी रहे। इस प्रकार नसिरूद्दीन महमूद को नया सुल्तान घोषित कर दिया गया। इस नये सुल्तान के सिंहासनावरोहण के साथ ही तुर्क अमीर पुनः शक्तिशाली वर्ग के रूप में स्थापित हो चुके थे तथा अन्य वर्ग जैसे ताज़िक, अबीसिनियायी आदि अपना महत्त्व हो चुके थे। नासिरूद्दीन महमूद के सिंहासनावरोहण मंे तुर्क अमीर बलबन का पूरा हाथ था। उसने सुल्तान के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर पारिवारिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लिये थे इसलिए सुल्तान ने बलबन को अपना संरक्षक/नायब-ए-ममलिकात पद प्रदान किया तथा उलुग खाँ की उपाधि भी प्रदान की। विभिन्न कारणों से बलबन वास्तविक रूप से शक्ति का उपभोग कर रहा था जिस कारण बलबन के अनेक विरोधी भी उत्पन्न हो रहे थे जिनमें कुछ भारतीय मूल के अमीरों का वर्ग भी शामिल था। भारतीय अमीर वर्ग के बढ़ते प्रभाव तुर्क अमीरों के लिए असहनीय था। अतः बलबन ने बड़ी चुतराई से फुर्ती दिखाते हुए सभी स्थितियाँ अपने पक्ष में कर ली अब बलबन सबसे मजबूत स्थिति में था तथा सुल्तान अब नाममात्र का शासक बन कर रह गया।

इस प्रकार इल्तुतमिश की मृत्यु के छः वर्ष अन्दर ही चार सुल्तानों की हत्या कर दी गयी जिसने सुल्तान और तुर्क अमीरों की सम्बन्धों की एक नई परिभाषा लिखी। यह तुर्क अमीरों की श्रेष्ठता का प्रतीक था। बलबन जब सुल्तान बना तब उसने तुर्क अमीरों की शक्ति को कमजोर बनाने का प्रयास किया और प्रमुख अमीरांे को धीर-धीरे समाप्त करता गया जो दिल्ली सल्तनत के आधार स्तम्भ थे। उसने तुर्कान-ए-चिहलगानी दल को समाप्त कर दिया जिसका वह स्वयं भी एक सदस्य था ताकि यह दल उसके शासन के लिए भविष्य में कोई खतरा उत्पन्न न कर सके। उसने तुर्की अमीरांे की शक्ति को संतुलित करने के लिए नवीन मुसलमानों को उच्च पद प्रदान किये। उसने सुल्तान पद की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए (जिसका महत्व इन्ही तुर्क अमीरों के कारण घटा था) राजत्व का दैवीय सिद्धान्त घोषित किया जिसके अनुसार सुल्तान पद को एक 'दैवीय संस्था' घोषित करते हुए अमीर वर्ग व उलमा वर्ग को सुल्तान के कार्यों से हस्तक्षेप करने तथा सलाह देने तक का अधिकार छीन लिया। उसने अपने दरबार में हँसने तक पर रोक लगा दी तथा उत्सव, दावत आदि में भाग लेना भी छोड़ दिया। बलबन का राजत्व सिद्धान्त सहयोग के स्थान पर पूर्णतः 'रक्त और लौह' की नीति पर आधारित था सम्भवतः सिज़दा व पायबोस जैसी परम्पराओं के पीछे यही श्रेष्ठता की भावना रही होगी। बलबन की तुर्क अमीरों को शक्तिहीन करने की नीति उसके व उसके वंश के पतन का कारण सिद्ध हुई।

लगभग बीस वर्ष मंत्री पद (1246-1266ई0) तथा (1266-1287-88ई0) तक सुल्तान के रूप में राज्य करने के बाद बलबन की मृत्यु हो गयी। बलबन की मृत्यु के बाद उसका वंश 3 वर्ष से ज्यादा शासन नहीं कर पाया। शीघ्र ही दिल्ली की सत्ता दो अमीरों मलिक कच्छन और मलिक सुर्खा के हाथों मे आ गयी। मलिक कच्छन और मलिक सुर्खा दोनों को गैर तुर्की अमीरों से भय था इसलिए उन्होंने ने उनके दमन की सोची जिसके अन्तर्गत दोनों ने गैर तुर्की अमीर ज़लालुद्दीन फिरोज़ खिलजी (जिसे सुल्तान कैकुबाद ने समाना का

सूबेदार तथा आरिज़-ए-मुमालिक पद प्रदान किया था) की हत्या की योजना बनाई किन्तु मलिक कच्छन की यह योजना विफल हुई तथा जलालुद्दीन ने दिल्ली पहुँचकर स्वयं को सुल्तान का संरक्षक घोषित कर दिया तथा 3 महीने बाद वह पूर्ण रूप से दिल्ली पर अधिकार करने सफल रहा। इस घटना से दिल्ली का सिहांसन सदैव के लिए तुर्को के हाथ से निकल गया।

अध्ययन का उद्देश्य

नव निर्मित दिल्ली सल्तनत के दो प्रमुख वर्गो में से एक अमीर वर्ग का प्रमुख योगदान रहा। ये अमीर वर्ग समय के साथ साथ अधिक शक्तिशाली होता गया और उनका महत्व बढ़ता गया।कभी कभी ये वर्ग इतना शक्तिशाली हो जाता था कि सुल्तान पद की इच्छा रखने लगे। अमीरों की ये इच्छा उन्हें विभिन्न प्रकार के षड्यत्रों ,बिद्रोहो के लिए प्रेरित करती थी।प्रस्तुत शोधपत्र अमीरों की इन्ही महत्त्वकांछाओ पर आधारित है।

निष्कर्ष

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि दिल्ली सल्तनत के निर्माण में अमीर वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने दिल्ली सल्तनत को विस्तार देने व उसे स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे जातीय श्रेष्ठता से इतने प्रभावित थे कि सुल्तान पद पर भी नियन्त्रण स्थापित करने में सफल रहे। उनकी महत्वाकाँक्षायें निरन्तर बढ़ती गयी और वे सुल्तान के पद पर भी आसीन हुए। अमीर वर्ग लगातार महत्वाकांक्षी बनता गया और राजनीति में हस्तक्षेप कर वास्तविक नियन्त्रण अपने हाथों में रखने में भी सफल रहा। उन्होंने अपने स्वार्थों की पूर्ति का कोई भी अवसर अपने हाथो से नहीं जाने दिया। अवसर मिलने पर उन्होंने सुल्तान निर्माता (किंग मेकर) की भी भूमिका निभायी। इस काल में अमीरों की बढ़ती महत्वाकाँक्षा से सुल्तान पद के स्तर में गिरावट एवं सुल्तान की पद-प्रतिष्ठा में निरन्तर कमी पायी। इस प्रकार यह माना जाता है कि अमीरों के पूर्ण सहयोग पर ही सुल्तान का अस्तित्व निर्भर करता था। वे ऐसे आधार स्तम्भ थे जिन पर सुल्तान की सत्ता टिकी हुई थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *चतुर्वेदी, हेरम्ब : मध्यकालीन भारत में राज्य एवं राजनीति, सहित्य संगम, इलाहाबाद, 2008*
2. *हबीब एवं निजामी, के0ऐ0 : दिल्ली सुल्तनत मैकमिनल प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 1970*
3. *मजूमदार, आर0सी0: दिल्ली सल्तनत भारतीय विद्या भवन, बम्बाई, 1960*
4. *शर्मा, घनश्यामदास: मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थायें, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान,*
5. *वर्मा, हरिश्चन्द्र : मध्यकालीन भारत Vol.2 हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली 1999*
6. *कुरेशी, आई0एस0 : द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द दिल्ली सल्तनत न्यू दिल्ली 1971*
7. *मेहता, जे0एल : मध्यकालीन भारत का बृहद इतिहास Vol. 3 जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नयी दिल्ली, 2001*
8. *श्रीवास्तव, ए0एल0: भारत का इतिहास, आगरा, 1965*
9. *अशरफ, के0एस0 : लाईफ एण्ड कंडीशनस 'द पिपुल ऑफ हिन्दुस्तान, दिल्ली, 1959*
10. *श्रीवास्तव, ए0एल0: दिल्ली सल्तनत, विपल अग्रवाल कम्पनी, 1965*